निरन्तर योगी के साथ निरन्तर सेवाधारी बनो

आज विशेष सबका यादप्यार लेते हुए बापदादा के पास गई। बापदादा का मधुर मिलन रूहानी दृष्टि तो सदा अपने में समा देती है। बापदादा ने अपने अलौकिक संसार और लौकिक संसार का समाचार पूछा। मैंने कहा बाबा लौकिक संसार में तो युद्ध के बातों की हलचल है। अलौकिक संसार में इतने ही ज़ोर-शोर से सेवा की, तपस्या की लहर चल रही है। बाबा बोले बच्चे, समय के नज़ारे तो देख रहे हो। समय के नज़ारों के साथ-साथ सेवा के नंगाड़े भी ज़ोर-शोर से बजने ही हैं। अब तो बच्चों को जैसे निरन्तर योगी बनने का अभ्यास आवश्यक है। ऐसे ही निरन्तर सेवाधारी भी बनना आवश्यक है। पहले तो स्वयं सदा बापदादा समान स्वमान में स्थित होना है, साथ में सदा उमंग-उत्साह में अचल-अड़ोल अथक बन चाहे मन्सा सेवा, चाहे वाणी की सेवा, चाहे चेहरे और चलन द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा में आगे बढ़ना ही है। यही समय प्रमाण बापदादा का इशारा है। आत्माओं को शान्ति की अंचली दो, सुख की अंचली दो।

साथ में समय के अनुसार विशाल बुद्धि बन शरीर के साधन भी इक्ट्ठा कर रखना है, जो समय पर धोखा न मिले। एक तरफ शरीर के साधन दूसरे तरफ रूहानी साधना दोनों में सदा ही अटेन्शन दे बढ़ते चलो, उड़ते चलो। ऐसे मिलन मनाए सबकी यादप्यार देते हुए बापदादा ने विदाई दी।